लास्ट सो फास्ट कैसे जायें?

त्याग क्यों करें ?

वरिष्ठ राजयोगी ब्र.कु. सूरज भाई

लास्ट सो फास्ट जाने वालों के लिए कुछ और सहज पुरूषार्थ की विधियां हैं। यदि सचमुच सच्चे दिल से आपके मन में लगन है, (सच्चे दिल के लगन की बात कर रहे हैं) कि मैं लास्ट में आया हूँ/आयी हूँ। मुझे बाबा से सब कुछ प्राप्त करना है। बहुत दिनों से भगवान से मिलने की इच्छा थी, बहुत भक्ति की थी। अब उसे मिलन हो रहा है तो ये मिलन निरन्तर होता रहे, आत्मा अतिन्द्रिय सुखों का भण्डार बन जाए, मुझे अब ये करना है। यदि सच्चे दिल का ये संकल्प है, तो ध्यान देंगे बिना त्याग के बड़ी प्राप्तियां नहीं हुआ करती, इसलिए अपने को त्याग करने के लिए तैयार करो।

आप सब जानते हैं यहाँ घरबार, बाल-बच्चों की त्याग करने की ज़रूरत नहीं है। यहाँ त्याग करना है अपनी उन सूक्ष्म कमज़ोरियों का, जो हमारी साधनाओं के मार्ग में बाधाएं हैं। जैसे बहुत सारी सांसारिक इच्छाएं। कर्म करते-करते ऐसी स्थिति पर आ जाओ, हमें कुछ नहीं चाहिए, अब सब कुछ एक शिवबाबा से लेना है। इस संसार से हमें कुछ नहीं चाहिए, इसको सर्वस्व त्याग कहेंगे। सोच लो आप इसके लिए तैयार हैं?

दूसरा त्याग- कर्मेन्द्रियों के रसों का त्याग। पहले कोई खाने-पीने में रहते थे, कोई व्यर्थ सुनने में रहते थे, किसी को बहुत कुछ देखने का शौक था, कोई बहुत पढ़ाई भी करते रहते थे, सारी दुनिया की नॉलेज ले रहे हैं। किसी को कहीं इन्ट्रेस्ट था, किसी को कहीं। अब अपने को अन्तर्मुखी करना है। पढ़ाई तो स्वयं भगवान पढ़ा रहा है जो सभी विद्याओं का सार है। राजयोग की विद्या संसार के सभी विद्याओं का सार है। भगवान से शक्तियां लेने के बाद और कुछ जानने की इच्छा नहीं रहती। सुनना है तो सुनो भगवान को। (जो मुझे सुनेंगे तो वो कहेंगे क्या बात कर रहे हैं बड़ी-बड़ी? कल्पना लगती है।) भगवान को सुनने का समय चल रहा है, वो सत्य ज्ञान दे रहा है, उसकी वाणी चल रही है। ये ज्ञान देकर वो हमें राह दिखा रहा है, उसकी सुनो। त्याग करना है तो एक व्यर्थ की इच्छाओं का, अच्छी इच्छाओं का नहीं। एक कर्मेन्द्रियों के रसों का। साथ में जोड़ दें आलस्य और अलबेलेपन को। सवेरे उठने में आलस आता है। कोई एक बहन कल आई। मैं आठ बजे उठती हूँ सोके। बहुत प्रतिज्ञाएं कर ली चार बजे उठने की, सफल ही नहीं हुई। मैंने उससे पूछा कितने बजे सोती हो। कहा- दस बजे। मैंने कहा कि दस बजे सोके, चार बजे उठना इस आयु में तो सहज बात है। अच्छी आयु थी 40-45 साल की, तुम्हें कोई दिक्कत नहीं होनी चाहिए। अलार्म नहीं लगाती हो क्या? अलार्म लगा लिया करो। कहा कुछ सुनता नहीं। ऐसी नींद आती है कि जैसे कि बस मर गई हूँ, कुछ सुनाई नहीं देगा। मैं समझ गया कि इसका कारण होता है कुछ। ब्रेन की डलनेस, ऑक्सीजन की कमी और सूक्ष्म विकर्मों का बोझ भी। जो आत्मा को सवेरे-सवेरे का ईश्वरीय सुख नहीं लेने देता।

यहाँ त्याग करना है अपनी उन सूक्ष्म कमज़ोरियों का, जो हमारी साधनाओं के मार्ग में बाधाएं हैं। जैसे बहुत सारी सांसारिक इच्छाएं। कर्म करते-करते ऐसी स्थिति पर आ जाओ, हमें कुछ नहीं चाहिए, अब सब कुछ एक शिवबाबा से लेना है।

तो बहुत ध्यान दें, जल्दी सोना, जल्दी उठना इसको अपना नियम बना लें। भगवान सवेरे-सवेरे अमृत बांटता है, वरदान बांटता है, सुख-शान्ति, खुशी-प्रेम का अनुभव कराता है, अपनेपन की फीलिंग देता है। भगवान ही हमारा है। हम उसके भक्त नहीं, हम तो बहुत प्यारे-लाडले बच्चे हैं ये वो फीलिंग देता है।

तो जिसको लास्ट सो फास्ट जाना है वो इस चीज़ पर बहुत ध्यान दें कि हमें सवेरे उठके परमात्म मिलन का सुख लेना है, उसको शुक्रिया किया करें तो उसके प्यार में मन मगन होता रहेगा। उससे क्षमा-याचना भी कर लें ज़्यादा पाप कर लिए हों। ज़्यादा विषयी जीवन रहा हो, ज़्यादा गड़बड़ कर ली हो जीवन में, कइयों ने की है बहुत गड़बड़, वो गड़बड़ करने वाले सब जानते हैं, हमने क्या-क्या गड़बड़ की। एक तो उसे भूलाना पड़ेगा, तो ये चीज़ें भूलना सहज भी नहीं होता है, यह भी सत्य है। भूलाना तो पड़ेगा। लेकिन आगे ऐसा कुछ न हो ये प्रतिज्ञा भी करनी पड़ेगी। - क्रमशः

भरतपुर-नगर डीग(राज.)। श्री राम रथ यात्रा मेला में आयोजित आध्यात्मिक शिव दर्शन प्रदर्शनी का रिबन काटकर उद्घाटन करते हुए गृह राज्य मंत्री जवाहर सिंह बेदम, सहकारिता मंत्री गौतम कुमार दग, नगरपालिका अध्यक्ष अवतार मित्तल, ब्र.कु. हीरा, ब्र.कु. संध्या, ब्र.कु. तारेश तथा अन्य।

नई दिल्ली-हरि नगर। एआईसीटीई हेडक्वार्टर ऑडिटोरियम में आयोजित 'इंटीग्रिटी स्पिरिचुअलिटी इन मॉडर्न एजुकेशन- द नीड ऑफ द ऑवर' कार्यक्रम का दीप प्रज्वलित कर शुभारम्भ करते हुए इंटरनेशनल मोटिवेशनल स्पीकर ब्र.कु. शिवानी, एआईसीटीई के चेयरमैन प्रो. टी.जी. सीताराम, यूजीसी के पूर्व चेयरमैन प्रो डी.पी. सिंह। कार्यक्रम में उपस्थित रहे वाइस चांसलर, डायरेक्टर्स, प्रोफेसर्स व इंजीनियरिंग कॉलेजेस के स्टूडेंट्स।

भरतपुर-राज.। अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर जिला प्रशासन एवं महिला अधिकारिता विभाग,भरतपुर द्वारा यूआईटी ऑडिटोरियम में आयोजित जिला स्तरीय कार्यक्रम में ब्र.कु. बबिता बहन को अध्यात्म के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य करने पर प्रशस्ति पत्र प्रदान कर सम्मानित करते हुए जिला कलेक्टर डॉ. अमित यादव, भाजपा जिलाध्यक्ष श्रीमती शिवानी दायमा, लोक सेवा सहायक निदेशक भारती भारद्वाज तथा अन्य।

फर्रूखाबाद-बीबीगंज(उ.प्र.)। राजयोगिनी दादी जानकी के पांचवें पुण्य स्मृति दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में पुष्पांजलि अर्पित करते हुए पुलिस निरीक्षक नितिन कुमार, विनीत कुमार, सौरभ कुमार, श्रीमती बीना अग्रवाल, नरेश कुमार, ब्र.कु. मंजू बहन तथा अन्य।

रुड़की-उत्तराखंड। महावीर इंटरनेशनल स्कूल में विद्यार्थियों को 'तनाव मुक्त जीवन' विषय पर सम्बोधित करने के पश्चात् समूह चित्र में ब्र.कु. मिशेल साइमन,फ्रांस, ब्र.कु. दीपिका तथा अन्य।

ऊपर से नीचे

1. किसी भी प्रकार का ....., चाहे ज्ञान का, चाहे योग का, चाहे सेवा का, चाहे बुद्धि का, चाहे कोई गुण का, जिसमें भी ..... होगा उसकी निशानी है- उसको अपमान बहुत जल्दी फील होगा।(4)
2. आदि से, स्थापना के समय से अब विनाश के समीप समय तक कौन-कौन से बच्चे अमर भव के वरदानी रहे हैं! उन्हों की ..... बना रहे थे।(2)
3. आजकल के यादगार में भी गुरू कहलाने वालों को ..... वचन महाराज कहा जाता है। चाहे झूठ भी बोल रहे हों लेकिन भक्त कहते हैं सत वचन।(2)
4. टीचर्स अर्थात् अपने फीचर्स द्वारा बाप का ..... कराने वाली।(4)
8. बापदादा ने अपने हस्तों से शिव ध्वज फहराया, ... काटी और सब बच्चों को बधाइयाँ दी।(2)
10. जैसे गुरू की गद्दी होती है ना तो यह मुरली का तख्त, मुरली धारण कराना और मुरली सुनाना। सुनाना सिर्फ नहीं लेकिन मुरली धारण कराना, यह टीचर्स को बापदादा ने गुरूभाई का तख्त दिया है और फारेन में तो देखा जाता है कि बहुत जल्दी से जल्दी ..... हो जाते हैं।(5)
11. आज आदि से, स्थापना के समय से अब ..... के समीप समय तक कौन-कौन से बच्चे अमर भव के वरदानी रहे हैं!(3)
12. आजकल के यादगार में भी गुरू कहलाने वालों को सत वचन ..... कहा जाता है।(4)
13. दादियां तो एक फारेन रहती है एक मधुबन रहती है लेकिन हर स्थान पर ..... रूप में निमित्त टीचर्स है या निमित्त पाण्डव है।(3)
14. बापदादा कहते हैं ..... अर्थात् अपने फीचर्स द्वारा बाप का साक्षात्कार कराने वाली।(3)
19. बहुत-बहुत सेवा की मुबारक हो। अच्छी सेवा करते हैं और ..... प्रतिदिन अनुभवी भी बनते जाते हैं।(2)

अव्यक्त मुरली 11-03-2002 (पहेली-17)2024 -25

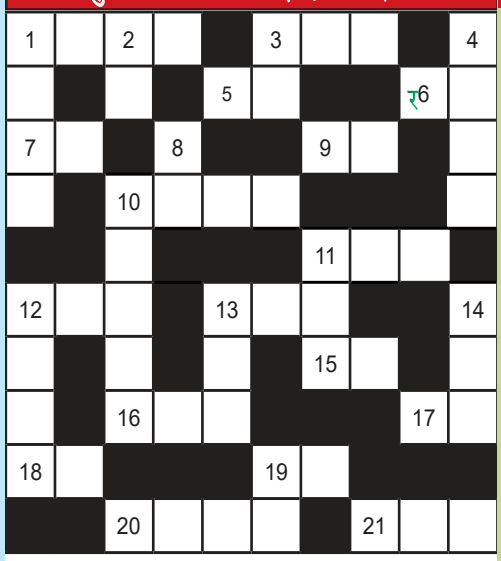

16/24- पहेली का उत्तर

(अव्यक्त मुरली 24-02-2002)

ऊपर से नीचे: 1. वायुमण्डल, 2. नम्बरवार, 3. सहज, 4. गति, 8. समय, 11. हलचल, 13. भाषण, 14. नारी, 16. अति, 18. प्रत्यक्ष, 19. भय।

बायें से दायें: 1. वायब्रेशन, 3. सहयोग, 5. मन्दिर, 6. जन्म, 7. सेवा, 9. लक्षण, 10. रहम, 13. भावना, 15. अचल, 17. रीति, 18. प्रकृति, 20. वाणी, 21. यज्ञ, 22. क्षमा।

बायें से दायें

1. किसी भी प्रकार का अभिमान, चाहे ज्ञान का, चाहे योग का, चाहे सेवा का, चाहे बुद्धि का, चाहे कोई गुण का, जिसमें भी अभिमान होगा उसकी निशानी है - उसको ..... बहुत जल्दी फील होगा।(4)
3. बाप का बनने से विशेषताओं के खज़ाने के अधिकारी बन जाते हो। एक दो विशेषतायें नहीं हैं, बहुत विशेषतायें हैं। जो यादगार में भी आपकी विशेषताओं का वर्णन है- 16 कला सम्पन्न, तो सिर्फ 16 नहीं हैं, 16 माना .....।(3)
5. हर एक ब्राह्मण आत्मा की विशेषता देख-देख हर्षित हो रहे हैं। दिल ही दिल में ..... गा रहे हैं- वाह बच्चे वाह !(2)
6. सुरक्षा, बचाव, संरक्षण।(2)
7. सम्मान, इज्जत, प्रतिष्ठा।(2)
9. अमृतवेले से वतन में अगर चारों ओर के कार्ड, ..., ई-मेल, संकल्प सब इकट्ठे करो तो देख -देखकर बड़ा मजा आयेगा।(2)
10. किस्मत, नसीब, भाग्य।(4)
11. यह बर्थ डे सारे कल्प में इस संगमयुग में ही मनाते हैं। सतयुग में भी ऐसा अलौकिक जन्म दिन नहीं मनायेंगे। वहाँ भी ऐसा ..... जन्म दिन नहीं होगा, जो बाप और बच्चों का एक ही साथ जन्म हो।(3)
12. भक्त कहते हैं सत वचन। तो यह आपके वचन का गायन है। महाराज, ... तो आप ही बनते हो ना! इसीलिए सत वचन महाराज माना ..... आत्मायें।(3)
13. परमात्म देन समझने से विशेषता में परमात्म शक्तियाँ भर जाती हैं। मेरी कहने से अभिमान और अपमान दोनों का ..... करना पड़ता है।(3)
15. डबल फारेनर्स के तीन ग्रुप हैं ना?(अन्तर्मुखी, मस्ताना, ... ग्रुप)(2)
16. सारा कल्प विश्व की सर्व आत्माओं की आप श्रेष्ठ आत्माओं के ऊपर महानता की ..... रहती है।(3)
17. निवास, गृह, आवास।(2)
18. आज शिव बाप अपने विश्व के चारों ओर के श्रेष्ठ भाग्यवान ब्राह्मण कुल को बहुत-बहुत अरब-खरब बार दिव्य अलौकिक ..... की मुबारक दे रहे हैं।(2)
19. आज के दिन अमृतवेले से सभी के ..... में यही खुशी की लहरें दिखाई दे रही हैं- वाह बाप का और हमारा अलौकिक जन्म।(2)
20. बापदादा..... निवासी बच्चों को सदा ही इमर्ज कर यादप्यार देते हैं, क्योंकि इतनी आत्माओं को बाप से मिलने का सुख देते हैं। सेवा करना अर्थात् बाप समान सुखदाई बन सुख देना।(4)
21. जैसे गुरू की गद्दी होती है ना तो यह ..... का तख्त, ... धारण कराना और ..... सुनाना। सुनाना सिर्फ नहीं लेकिन ..... धारण कराना, यह टीचर्स को बापदादा ने गुरूभाई का तख्त दिया है।(3)